मेरे गुरु उस परम सन्त ने मुझे वरण कर लिया। मैं उस सद्गुरु पर अपना चित् मन तथा बुद्ध न्यौछावर कर दूंगा। मेरे गुरु चारों ओर प्रकाशमान हैं। उन्होंने मुझे परमेश्वर का ध्यान कराया। मैंने उनकी कृपा से अलख ओंकार के दर्शन किये। वे मुझ से बोले अगम देश की ओर चल पड़ो। उन्होंने मुझ पर दृष्टिपात किया। मुझे वरण किया। गुरु ने मेरे तीनों प्रकार के ताप दूर किये। मेरे बुरे शापों तथा पापों को दूर करके मुझे सुखी बना दिया।

गुरु के शक्ति पात से स्वामी जी दायें-बायें आँखों की रोशनी में दृष्टा तथा दृश्य में अन्दर तथा बाहिर, विष्णु ब्रह्मा, शिव, गणपति, उमा आदि में परम शिव के ही दर्शन करते थे :—

खोवर्यचई दछिन्य चई मंज अछिन गाश चई।
वुछान चई वुछिवोन चई, चई छुख चई छुख चई छुख चई॥
अन्दर चई न्यबर चई, हुश जोर जबर चई।
विष्णु चई ब्रह्मा चई, सदा शिव उमा चई॥
गणपत चई उमा चई चई छुख चई चई छुख चई छुख चई।

प्रभु (गोविन्द) की सनातनता के बारे में स्वामी जी कहते हैं :—

आलमई त्येलि नय ओस जामुतुय,
सिरिये चन्द्रमह त्येलि नय ओस दामुतुय।
वीद शास्त्र त्येलि नय ओस द्रामुतुय,
ओस गोविन्द तथ्य अवस्थायि मंज वुछ।

जब संसार का जन्म ही नहीं हुआ था। सूर्य तथा चन्द्रमा का जन्म ही नहीं हुआ था। वेदों तथा शास्त्रों का आगमन ही नहीं हुआ था। गोविन्द उस अवस्था में भी विद्यमान था।

वर्ष १९७३ में श्रावण शुक्ल चतुर्दशी के दिन स्वामी जी की दिव्य ज्योति महा ज्योति में विलीन हो गई। आत्मा का विश्वात्मा के साथ मिलन हो गया। स्थूल सूक्ष्म के साथ मिल गया। साकार निराकार में समा गया।

From P.N. 107 to 111.

शिना पर संस्कृत का प्रभाव

• बदरी नाथ शास्त्री (कल्ला)

सर जार्ज ग्रियर्सन के मतानुसार दार्दिक वर्ग में मुख्यतः तीन भाषायें आती हैं:— (१) शिना (२) कश्मीरी (३) कोहिस्तानी[1]।

गिलगत[2] के इलाके में जो जबान बोली जाती है, उसको शिना कहते हैं। शिना जबान के क्षेत्र का क्षेत्रफल बारह हज़ार तीन सौ बावन (१२३५२) वर्ग-मील है। इसे प्रायः तीन सौ आदमी बोलते हैं। शिना जबान के प्रदेश में निम्न क्षेत्र सम्मिलित हैं :— गिलगत की तहसील, रियासत-नगर का नीचे का हिस्सा, पन्याल, दारयल, तांगीर, सिन्ध-कोहिस्तान, चिलास, गुरेजवादी, तिलेल, द्रास शहर तक का टुकड़ा, अस्तोर की तहसील, रोन्दो तक सिन्ध की वादी। इन क्षेत्रों में शिना ने भाषा वैज्ञानिक गुणों के कारण अपना आधिपत्य जमा लिया है।

शिना प्रदेश के बाहिर साथ साथ कई भाषायें बोली जाती हैं क्योंकि इसके चारों तरफ भिन्न भिन्न जातियों और नस्लों के लोग आबाद हैं। इसके उत्तर पूर्व में हुंजा नगर है। वहां बुरुशस्की (Burushaski) बोली जाती है। शिना प्रदेश के उत्तर में गोहजाल है। वहां गोहजाली मातृभाषा है। अश्कोमन पश्चिम की तरफ है, वहां फारसी और खोर (चित्राल की जबान) बोली जाती है। यासीन में बिल्तुम, खोर और शिना बोलते हैं। पश्चिम की तरफ तहसील गोपस के पश्चिमी आधे भाग में खोर और प्राचीन फारसी चालू है। पूर्वीयभाग में शिना और शंपू, स्वातरियासत में पहले का रिवाज है। शिना प्रदेश के पूर्वीय भाग में कागान-वादी के लोग और मुजफराबाद के लोग पंजाबी बोलते हैं। कश्मीर में कश्मीरी बोली जाती है। द्रास शिना प्रदेश के दक्षिण पूर्वीय कोने में स्थित है। यहाँ के लोग तीन भाषायें बोलते हैं :—कश्मीरी, पोरगी तथा शिना।

शिना प्रदेश के पूर्व में सारा बलतिस्तान है और वहाँ सारे इलाके में लोग बलतिस्तानी जबान बोलते हैं। शिना की चार उपभाषायें हैं :—

(१) गिलगती उपभाषा जो स्तरीय (Standard) शिना कहलाती है। पन्याल की भाषा भी इसी से मिलती-जुलती है। (२) अस्तोरी उपभाषा अस्तोर, गुरेज, और द्रास में बोली जाती है। (३) चिलासी उपभाषा चिलास और दारयल

(1) Linguistic Sarvey of India, by G. A. Grierson. Vol. VIII Part II P.N. 2 (Introduction).

(२) शिना और गिलगत की जबान लेखक—डा० नामूम, पृष्ठ नं० ३६३

ताँगीर में प्रचलित है। (४) चौथी उपभाषा ब्रूकपा कहलाती है। इन दार्द लोगों को भी 'ब्रूकपा' ही कहते हैं जो इस उपभाषा को बोलते हैं। ये दार्द लोग वादी सिन्ध में ऊपर की तरफ चले गये और अस्कर्दू, परकोता, तोलती से गुजर कर पोरीग में जाकर आबाद हो गये। पोरीग के दार्द लोगों की 'ब्रूकपा' भाषा जो शिना की एक उपभाषा है, गिलगती स्तरीय भाषा से इस रूप में भिन्न हो गई है कि शिना बोलने वाले इसको नहीं समझ सकते।

ऊपर तो 'दर्द' शब्द का उल्लेख दो तीन बार आ गया है। अतः इस पर प्रकाश डालना आवश्यक है। संस्कृत में[1] 'दर्द' शब्द का अर्थ पर्वत है। संस्कृत साहित्य में पर्वत पर रहने वालों को 'दार्द' के नाम से अभिहित किया जाता है। भविष्यत् पुराण, वायु पुराण, —हरिवंश पुराण — मनुः स्मृति, महाभारत में भी इन्हें 'दर्द' कहा जाता है। कल्हण की राजतरङ्गिणी में भी प्रायः 'दर्द' या 'दार्द' शब्द का प्रयोग हुआ है। पामीर और पंजाब के उत्तर पश्चिम का मध्य-पार्वत्य प्रदेश दर्दिस्तान के नाम से प्रसिद्ध है। दूसरे शब्दों में दर्द देश के नाम के अन्तर्गत समस्त पार्वत्य प्रदेश हिन्दुकुश तथा भारत की सीमा के दर्मियान वाले भाग आते हैं। यद्यपि यह सारा प्रदेश केवल दर्दों द्वारा बसा हुआ नहीं है, तथापि इस भूखण्ड में समस्त आर्य भाषायें बोलने वालों को दार्दिक नाम से पुकारा जाता है।

शिना दर्द भाषाओं का शुद्ध उदाहरण है। इसका स्तरीय रूप गिलगत के आसपास बोला जाता है। जिस प्रकार प्रायः भारत की समस्त भाषाओं तथा उपभाषाओं पर संस्कृत भाषा का प्रभाव किसी न किसी रूप में नज़र आता है, उसी प्रकार संस्कृत का प्रभाव शिना पर स्पष्टतम दृष्टिगोचर होता है। प्रायः संस्कृत तथा शिना के शब्दों में रूप साम्य के साथ-साथ ध्वनि साम्य भी है और अर्थ साम्य भी। निम्नतालिका से यह पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है :—

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
दूर	दूर	दूर	दूर
रात	रात्रिः	राथ	रात
लिख	लिख	लेख	लिखो
शुवुक	शिशु	—	बच्चा
खह	खादय	ख्य	खाओ
सह	स्वसा	—	बहिन
पवन	पथिन्	—	रास्ता

1 A Sanskrit English Dictionary by Sir M. Monier williams. पृष्ठ नं० ४७०

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
बिजो	व्रज्	—	जाना
सूरई	सूर्य	सिरी	सूर्य
दिश	दिशा	द्यशा	दिशा
पश	पश्य	पशुन	देखो
हर	हर	—	लेजाओ
अछी	अक्षि	अॅछ	आंख
नोम	नाम	नाव	नाम
दर	द्वार	दॅर	द्वार
बन्द	बन्ध	बन्द	बन्द
बाल-बालक	बालः	बालुक	बालक
रगो	रोगी	रूगी	रोगी
मुशा	मनुष्यः	मनुष	मनुष्य
अहुक	अल्प + कः	ओप	थोड़ा
बार	भार	बोर	बोझ
चोम	चर्म	चम	चाम
गिरवम	ग्रीष्म	ग्रिष्म	गर्मी
दुत	दुग्ध	द्वद	दूध
रनो	रन्धन	रन	पकाना
शैव	श्वेत	छोत	सफेद
मालू	महल्लः	मोल	पिता
हिन	हिम	—	बर्फ
खल	खल	खल	खलिहान
बुन	वन	वन	वन
सिन	सिन्धु	स्यन्द	दरिया
श्वुन	श्वन	हून	कुत्ता
शकरी	शर्करीयः	शकर	शकरकी
(१) हंज	हंस	अॅंज्ज	हंस
गूम	गोधूमः	—	गेहूं
यो	यव	—	जौ

(२) प्रायः संस्कृत के शादि अथवा शान्त शब्द कश्मीरी में 'ह' में परिवर्तित होते हैं जैसेः—शत से 'हथ', दश से 'दह', क्रोश से 'क्रोह', शमन से 'हमुन', आदि।

व्री	व्रीहि	—	चावल
मुंग	मुग्दा	म्वङ्ग	मूंग
मजुर	मसूरः	मुसुर	मसूर
मारुच	मरिच	मर्च	मिर्च
शा	शाकः	हाख	साग
स्वङ्	स्वर्ण	स्वन	सोना
नानग	नाणकः	नानुक	सिक्का
(२) शुक	शुष्क	होख	सूखा
ले	लूञ् (छेदने)	लो+नुन	काट
हल	हल	हल	हल
मोस	मासः	मोस	महीना
देस	दिवस	—	दिन
रङ्ग	रंग	रंग	रंग
जरु	जरा	—	बूढा
थुलो	स्थूलः	—	मोटा
गानी	गणिका	गॉत्र	वेश्या
अगार	अङ्गार	--	आग
तुन	तुण्ड	तून	नाभि
जिप	जिह्वा	ज्यव	जीभ
पाय	पाद	पेय	पांव
शस्दुर	श्वघुरः	हिहुर	ससुर
कुड	कुडा	--	दीवार

वारों के नाम

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
ऐथवार	आदित्यवारः	आथवार	इतवार
चन्द्रार	चन्द्रवारः	चन्दरवार	सोमवार
बोङ्वार	भौमवारः	बोमवार	मंगलवार
बडदवार	बुधवारः	बोदवार	बुधवार
ब्रसवार	बृहस्पतिवारः	ब्रसवार	बृहस्पतिवार

(२) प्रायः संस्कृत के हादि शब्द कश्मीरी में 'अ' में परिवर्तित होते हैं जैसे :— हस्त से 'अथ', ह्वल से 'अल', हस से 'अस', आदि ।

जुम्माह	(अरबीशब्द)	जुमाह	शुक्रवार
बटार (बटार)	भट्टारकवारः	बटवार	शनिवार

संख्यावाची शब्दों के नाम :—

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
एक	एकः	अख	एक
१ दुव	द्वौ	ज	दो
त्रय	त्रयः	त्रय	तीन
चार	चत्वारः	चोर	चार
पोंश	पंच	पेच्छ	पांच
छन:	षट्	श	छः
सत	सप्त	सथ	सात
अंश्र	अष्ट	अेठ	आठ
नव	नव	नव	नौ
दई	दश	दह	दस

(१) प्रायः संस्कृत के 'द' को कश्मीरी में 'ज' बनता है जैसे :—द्वीप से जुव, दीप्ति से जिर्ति (न) 'द्व' व से ज आदि ।

मेरे गुरु उस परम सन्त ने मुझे वरण कर लिया। मैं उस सद्गुरु पर अपना चित् मन तथा बुद्ध न्योछावर कर दूंगा। मेरे गुरु चारों ओर प्रकाशमान हैं। उन्होंने मुझे परमेश्वर का ध्यान कराया। मैंने उनकी कृपा से अलख ओंकार के दर्शन किये। वे मुझ से बोले अगम देश की ओर चल पड़ो। उन्होंने मुझ पर दृष्टिपात किया। मुझे वरण किया। गुरु ने मेरे तीनों प्रकार के ताप दूर किये। मेरे बुरे शापों तथा पापों को दूर करके मुझे सुखी बना दिया।

गुरु के शक्ति पात से स्वामी जी दायें-बायें आँखों की रोशनी में दृष्टा तथा दृश्य में अन्दर तथा बाहिर, विष्णु ब्रह्मा, शिव, गणपति, उमा आदि में परम शिव के ही दर्शन करते थे :—

खोवर्यंचई दछिन्य चई मंज अछिन गाश चई।
वुछान चई वुछिवोन चई, चई छुख चई छुख चई छुख चई॥
अन्दर चई न्यबर चई, हवा ज़ेर ज़बर चई।
विश्णु चई ब्रह्मा चई, सदा शिव उमा चई॥
गणपत चई उमा चई चई छुख चई चई छुख चई छुख चई।

प्रभु (गोविन्द) की सनातनता के बारे में स्वामी जी कहते हैं :—

आलमई त्येलि नय ओस जामुतुय,
सिरियि चन्द्रमह त्येलि नय ओस दामुतुय।
वीद शास्त्र त्येलि नय ओस द्रामुतुय,
ओस गोविन्द तथ्य अवस्थायि मंज वुछ।

जब संसार का जन्म ही नहीं हुआ था। सूर्य तथा चन्द्रमा का जन्म ही नहीं हुआ था। वेदों तथा शास्त्रों का आगमन ही नहीं हुआ था। गोविन्द उस अवस्था में भी विद्यमान था।

वर्ष १९७३ में श्रावण शुल्क चतुर्दशी के दिन स्वामी जी की दिव्य ज्योति महा ज्योति में विलीन हो गई। आत्मा का विश्वात्मा के साथ मिलन हो गया। स्थूल सूक्ष्म के साथ मिल गया। साकार निराकार में समा गया।

शिना पर संस्कृत का प्रभाव

• बदरी नाथ शास्त्री (कल्ला)

सर जार्ज ग्रियर्सन के मतानुसार दार्दिक वर्ग में मुख्यत: तीन भाषायें आती हैं :—
(१) शिना (२) कश्मीरी (३) काहिस्तानी[1]।

गिलगत[2] के इलाके में जो जबान बोली जाती है, उसको शिना कहते हैं। शिना जबान के क्षेत्र का क्षेत्रफल बारह हजार तीन सौ बावन (१२३५२) वर्ग-मील है। इसे प्राय: तीन सौ आदमी बोलते हैं। शिना जबान के प्रदेश में निम्न क्षेत्र सम्मिलित हैं :— गिलगत की तहसील, रियासत-नगर का नीचे का हिस्सा, पन्याल, दारयल, तांगीर, सिन्ध-कोहिस्तान, चिलास, गूरेजवादी, तिलेल, द्रास शहर तक का टुकड़ा, अस्तोर की तहसील, रोन्दो तक सिन्ध की वादी। इन क्षेत्रों में शिना ने भाषा वैज्ञानिक गुणों के कारण अपना आधिपत्य जमा लिया है।

शिना प्रदेश के बाहिर साथ साथ कई भाषायें बोली जाती हैं क्योंकि इसके चारों तरफ भिन्न भिन्न जातियों और नस्लों के लोग आबाद हैं। इसके उत्तर पूर्व में हुंजा नगर है। वहां बुरुशस्की (Burushaski) बोली जाती है। शिना प्रदेश के उत्तर में गोहजाल है। वहां गोहजाली मातृभाषा है। अश्कोमन पश्चिम की तरफ है, वहां फारसी और खोर (चित्राल की जबान) बोली जाती है। यासीन में बिल्तुम, खोर और शिना बोलते हैं। पश्चिम की तरफ तहसील गोपस के पश्चिमी आधे भाग में खोर और प्राचीन फारसी चालू है। पूर्वीयभाग में शिना और शंपू, स्वातरियासत में पहले का रिवाज है। शिना प्रदेश के पूर्वीय भाग में कागान-वादी के लोग और मुजफराबाद के लोग पंजाबी बोलते हैं। कश्मीर में कश्मीरी बोली जाती है। द्रास शिना प्रदेश के दक्षिण पूर्वीय कोने में स्थित है। यहां के लोग तीन भाषायें बोलते हैं :—कश्मीरी, पोरेगी तथा शिना।

शिना प्रदेश के पूर्व में सारा बलतिस्तान है और वहां सारे इलाके में लोग बलतिस्तानी जबान बोलते हैं। शिना की चार उपभाषायें हैं :—

(१) गिलगती उपभाषा जो स्तरीय (Standard) शिना कहलाती है। (२) अस्तोरी उपभाषा अस्तोर, पन्याल की भाषा भी इसी से मिलती-जुलती है। (३) चिलासी उपभाषा चिलास और दारयल गुरेज, आर द्रास में बोली जाती है।

---

(1) Linguistic Sarvey of India, by G. A. Grierson.
Vol. VIII Pait II P.N. 2 (Introduction).

(२) शिना और गिलगत की जबान लेखक—डा० नामूम, पृष्ठ नं० ३६३

ताँगीर में प्रचलित है। (४) चौथी उपभाषा ब्रूकपा कहलाती है। इन दार्द लोगों को भी 'ब्रूकपा' ही कहते हैं जो इस उपभाषा को बोलते हैं। ये दार्द लोग वादी सिन्ध में ऊपर की तरफ चले गये और अस्कर्दू, परकोता, तोलती से गुजर कर पोरीग में जाकर आबाद हो गये। पोरीग के दार्द लोगों की 'ब्रूकपा' भाषा जो शिना की एक उपभाषा है, गिलगती स्तरीय भाषा से इस रूप में भिन्न हो गई है कि शिना बोलने वाले इसको नहीं समझ सकते।

ऊपर तो 'दर्द' शब्द का उल्लेख दो तीन बार आ गया है। अतः इस पर प्रकाश डालना आवश्यक है। संस्कृत में[1] 'दर्द' शब्द का अर्थ पर्वत है। संस्कृत साहित्य में पर्वत पर रहने वालों को 'दार्द' के नाम से अभिहित किया जाता है। भविष्यत् पुराण, वायु पुराण, —हरिवंश पुराण— मनुः स्मृति, महाभारत में भी इन्हें 'दर्द' कहा जाता है। कल्हण की राजतरङ्गिणी में भी प्रायः 'दर्द' या 'दार्द' शब्द का प्रयोग हुआ है। पामीर और पंजाब के उत्तर पश्चिम का मध्य-पार्वत्य प्रदेश दर्दिस्तान के नाम से प्रसिद्ध है। दूसरे शब्दों में दर्द देश के नाम के अन्तर्गत समस्त पार्वत्य प्रदेश हिन्दुकुश तथा भारत की सीमा के दर्मियान वाले भाग आते हैं। यद्यपि यह सारा प्रदेश केवल दर्दों द्वारा बसा हुआ नहीं है, तथापि इस भूखण्ड में समस्त आर्य भाषायें बोलने वालों को दार्दिक नाम से पुकारा जाता है।

शिना दर्द भाषाओं का शुद्ध उदाहरण है। इसका स्तरीय रूप गिलगत के आसपास बोला जाता है। जिस प्रकार प्रायः भारत की समस्त भाषाओं तथा उपभाषाओं पर संस्कृत भाषा का प्रभाव किसी न किसी रूप में नज़र आता है, उसी प्रकार संस्कृत का प्रभाव शिना पर स्पष्टतम दृष्टिगोचर होता है। प्रायः संस्कृत तथा शिना के शब्दों में रूप साम्य के साथ-साथ ध्वनि साम्य भी है और अर्थ साम्य भी। निम्नतालिका से यह पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है :—

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
दूर	दूर	दूर	दूर
रात	रात्रिः	राथ	रात
लिख	लिख	लेख	लिखो
शुवुक	शिशु	—	बच्चा
खह	खादय	ख्य	खाओ
सह	स्वसा	—	बहिन
पवन	पथिन्	—	रास्ता

1 A Sanskrit English Dictionary by Sir M. Monier williams. पृष्ठ नं० ४७०

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
बिजो	व्रज्	—	जाना
सूरई	सूर्य	सिरी	सूर्य
दिश	दिशा	दशा	दिशा
पश	पश्य	पशुन	देखो
हर	हर	—	लेजाओ
अछी	अक्षि	अँछ	आंख
नोम	नाम	नाव	नाम
दर	द्वार	दॅर	द्वार
बन्द	बन्ध	बन्द	बन्द
बाल-बालक	बालः	बालुक	बालक
रगो	रोगी	रूगी	रोगी
मुशा	मनुष्यः	मनुष	मनुष्य
अहुक	अल्प + कः	ओप	थोड़ा
बार	भार	बोर	बोझ
चोम	चर्म	चम	चाम
गिरवम	ग्रीष्म	ग्रिष्म	गर्मी
दुत	दुग्ध	द्वद	दूध
रनो	रन्धन	रन	पकाना
शेव	श्वेत	छोत	सफेद
मालू	महल्लः	मोल	पिता
हिम	हिम	—	बर्फ
खल	खल	खल	खलिहान
बुन	वन	वन	वन
सिन	सिन्धु	स्यन्द	दरिया
श्वुन	श्वन	हून	कुत्ता
शकरी	शर्करीयः	शकर	शकरकी
(१) हंज	हंस	अँज्ज	हंस
गूम	गोधूमः	—	गेहूं
यो	यव	—	जौ

(२) प्रायः संस्कृत के शादि अथवा शान्त शब्द कश्मीरी में 'ह' में परिवर्तित होते हैं जैसे:—शत से 'हथ', दश से 'दह', क्रोश से 'क्रोह', शमन से 'हमुन', आदि।

ब्री	ब्रीहि	—	चावल
मुंग	मुग्दा	म्वङ्ग	मूंग
मजुर	मसूरः	मुसुर	मसूर
मारुच	मरिच	मर्च	मिर्च
शा	शाकः	हाख	साग
स्वङ्	स्वर्ण	स्वन	सोना
नानग	नाणकः	नानुक	सिक्का
(२) शुक	शुष्क	होख	सूखा
ले	लूञ् (छेदने)	लो + नुन	काट
हल	हल	हल	हल
मोस	मासः	मोस	महीना
देस	दिवस	—	दिन
रङ्ग	रंग	रंग	रंग
जर	जरा	—	बूढा
थुलो	स्थूलः	—	मोटा
गानी	गणिका	गॉत्र	वेश्या
अगार	अङ्गार	—	आग
तुन	तुण्ड	तून	नाभि
जिप	जिह्वा	ज्यव	जीभ
पाय	पाद	पेय	पांव
शस्दुर	श्वशुरः	हिहुर	ससुर
कुड	कुडा	—	दीवार

वारों के नाम

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
ऐथवार	आदित्यवारः	आथवार	इतवार
चन्द्रार	चन्द्रवारः	चन्दरवार	सोमवार
बोङ्वार	भौमवारः	बोमवार	मंगलवार
बडदवार	बुधवारः	बोदवार	बुधवार
ब्रसवार	बृहस्पतिवारः	ब्रसवार	बृहस्पतिवार

(२) प्रायः संस्कृत के हादि शब्द कश्मीरी में 'अ' में परिवर्तित होते हैं जैसे :— हस्त से 'अथ', ह्ल से 'अल', हस से 'अस', आदि ।

जुम्माह	(अरबी शब्द)	जुमाह	शुक्रवार
बटार (बटार)	भट्टारकवारः	बटवार	शनिवार

संख्यावाची शब्दों के नाम :—

शिना	संस्कृत	कश्मीरी	हिन्दी
एक	एकः	अख	एक
१ दुब	द्वौ	ज	दो
त्रय	त्रयः	त्रय	तीन
चार	चत्वारः	चोर	चार
पोंश	पंच	पेन्छ	पांच
छन:	षट्	श	छः
सत	सप्त	सथ	सात
अंश्र	अष्ट	अठ	आठ
नव	नव	नव	नौ
दई	दश	दह	दस

(१) प्रायः संस्कृत के 'द' को कश्मीरी में 'ज' बनता है जैसे :—द्वीप से जुव, दीप्ति से जिर्ति (न) 'द्व' व से ज आदि ।